

# सारिउँ कौइ औगौणिकेरी मौत



bangani



# सारिउँ कौइ औगौणिकेरी मौत

bangani  
uttarkashi, uttrakhand, india



For permission to reuse, contact the copyright holder.

Bangani Language Book  
Red level book

परकाशण:-

NLCI

बंगाणी मसी समिति समू

## दो बात

हम बंगाणी क्षेत्र में साक्षरता कार्यक्रम चला रहे हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ना लिखना सीख सकें। उसी आधार पर इस किताब को भी तैयार किया गया है। यह एक कहानी की किताब है। जिसमें दुनियां की सबसे पहली मौत कैसे हुई, उसके बारे में बहुत ही सरल रीति से बताया गया है। इस कहानी को हमने अपनी मातृभाषा में ही तैयार किया है जिससे वह इस कहानी को आसानी से समझ सके। और अपनी मातृभाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास भी कर सकें।







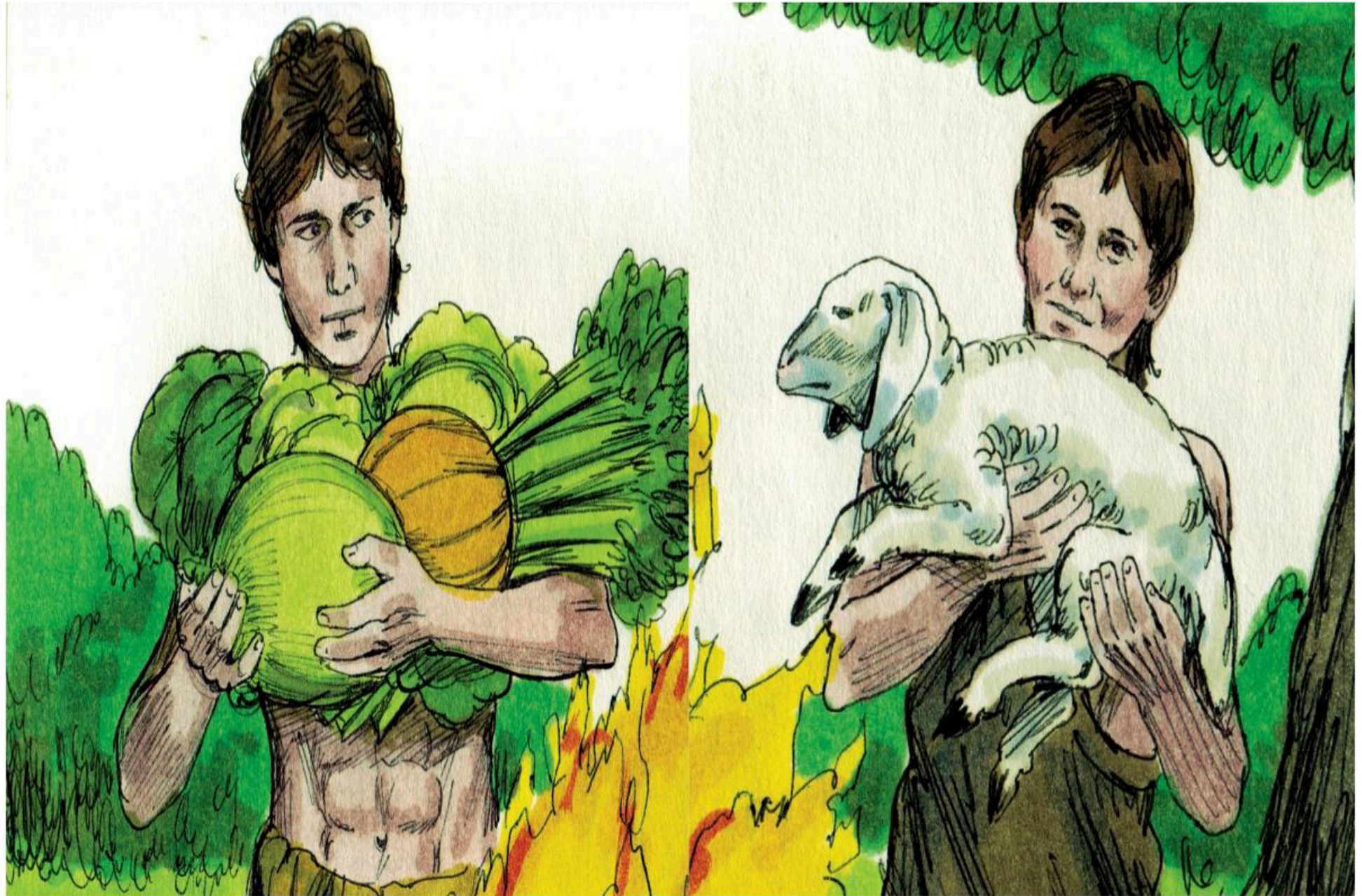
ज़ौ परमेश्वरेइ माणूछ चाणौ । तैबै तिउं  
रौ नौऊं आदम औज़ि हवा थौ । आदम  
औज़ि हवा रै दुइ बेटा उवै कैन औज़ि  
हाबिल ।







हाबिल बेड़ बाकरिउं चौरा थौ। औज़ि  
कैन डोखरौउं दी काम कौरै थौ। एक  
दूस कैन औज़ि हाबिलेइ परमेश्वर काइ  
बेंट चौड़ाणेखि आणी।





कैनेइ परमेश्वर काइ आपडै नाज़ माइं  
कौइ थोड़ी बेंट आणी। औज़ि हाबिलेइ  
बी बेडु माइं कौइ बेंट चौड़ाइ।  
परमेश्वरेइ हाबिल री बेंट मानी।





ज़ौ परमेश्वरेइ कैन रि बेंट ना मानी तैबै  
कैनेइ रोश लागौ। एज़ी बौज़ै कौइ  
परमेश्वरेइ कैन आरि बोलौ कि तू  
केला रोशुवौ? ज़ौ तू बोलौ कौरै थौ तै  
तेरी बेंट का ना मानियैं थी?





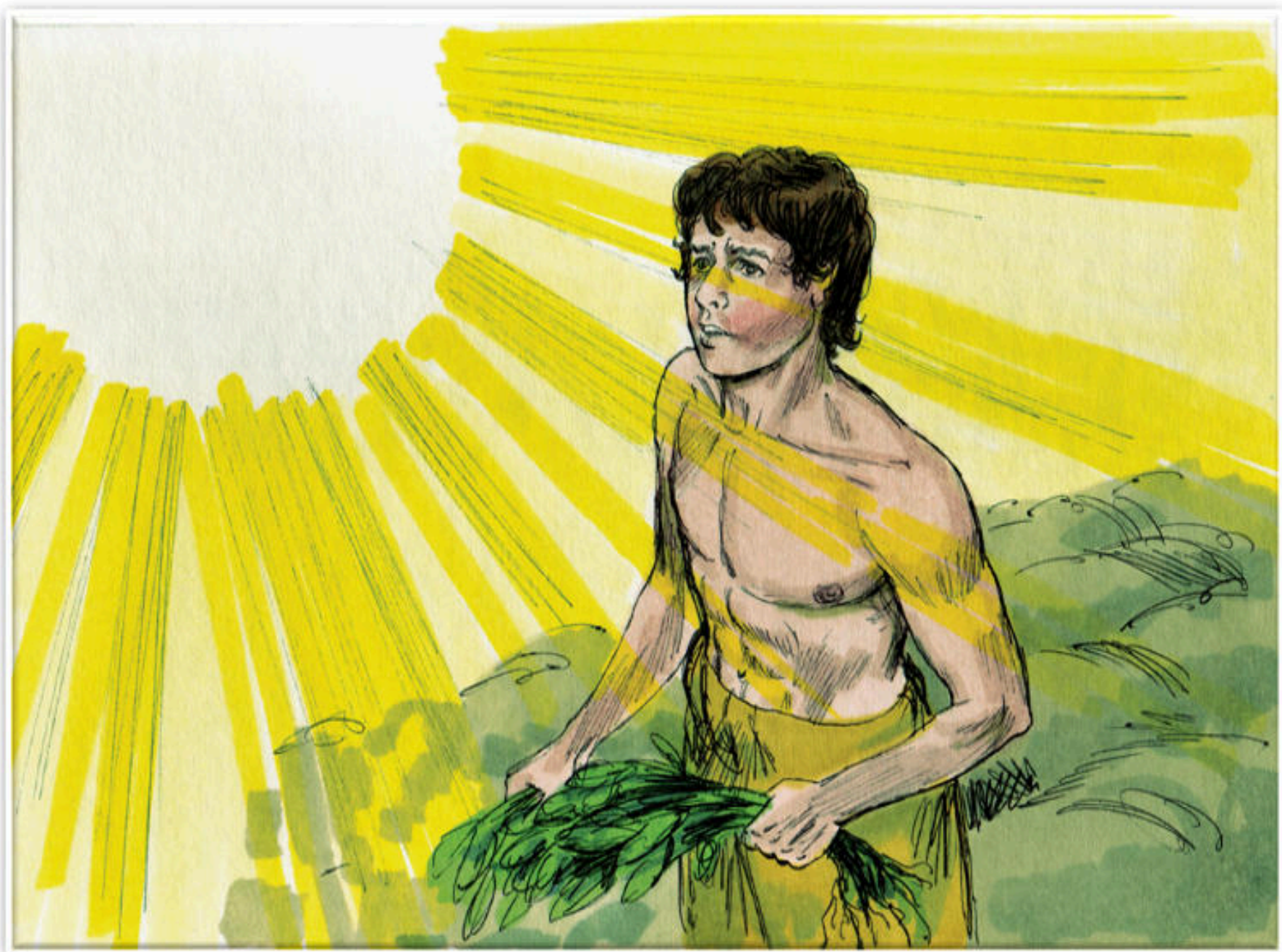


तेतबासियै कैनेइ आपड़ौ बाइ हाबिल  
डोखरेदि गिणौ। औज़ि तेत्कै तिणी  
आपड़ौ बाइ पिटौ। औज़ि तिणी आपड़ौ  
बाइ हाबिल ज़ांगी देणौ।





तैबै परमेश्वरेइ कैन कौइ पुछौ, कि तेरौ  
बाइ हाबिल केत्कै? कैनेइ बोलौ  
पौतौइ ना नौथि आउँ का तेसरौ  
चोकिदार। तैबै परमेश्वरेइ कैन आरि  
बोलौ, ताइं एज़ौ का कियौ?



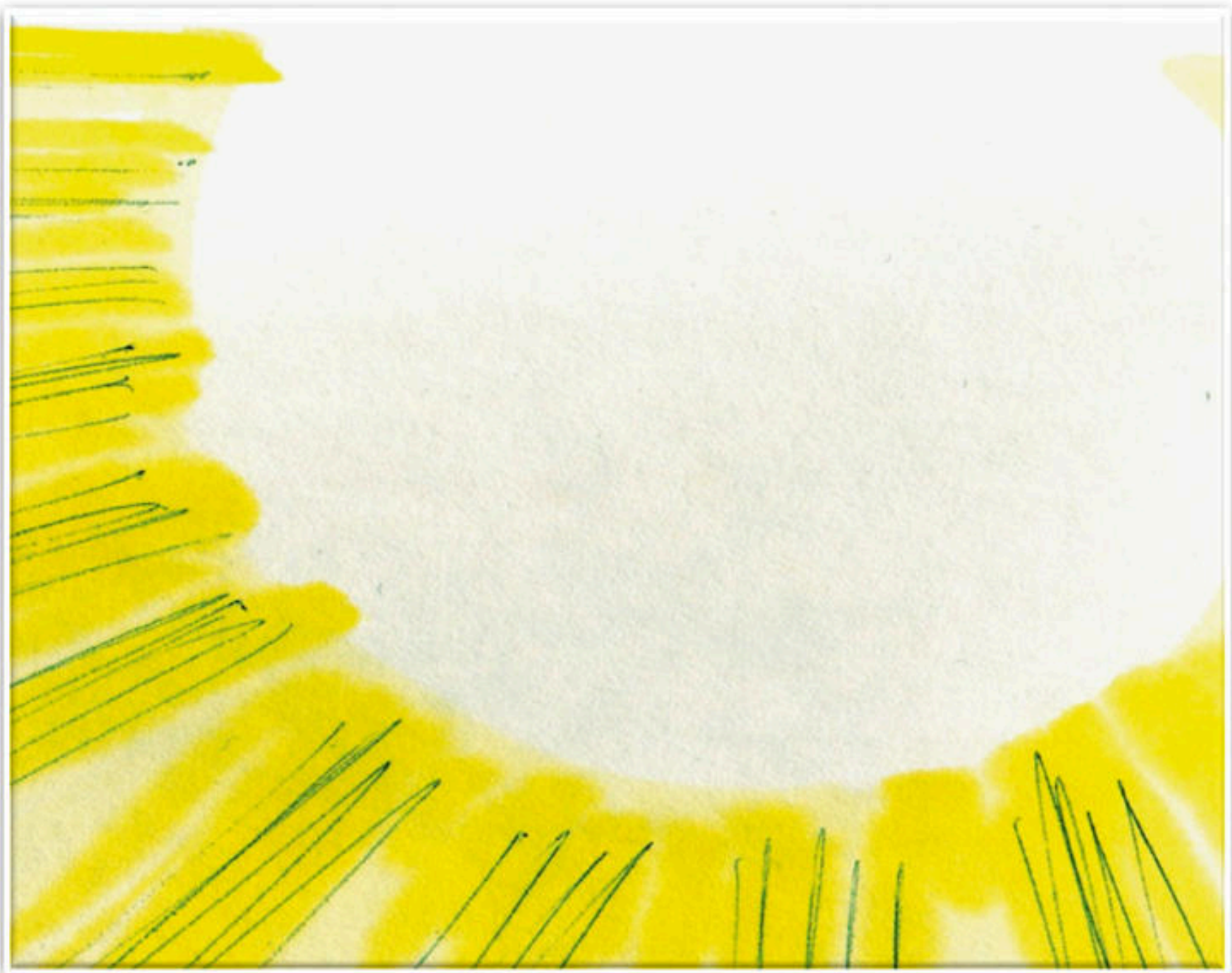


हाबिल रौ लो तै दौरति माइं कौइ मुंखि  
औटाइन्दै लागौन्दौ । दौरतिएइ तेरौ बाइ  
रौ लो पिणेखि आपड़ौ मूँ खोलौन्दौ ।  
औज़ि तेसरौ श्राप ताउँखि लागौन्दौ ।



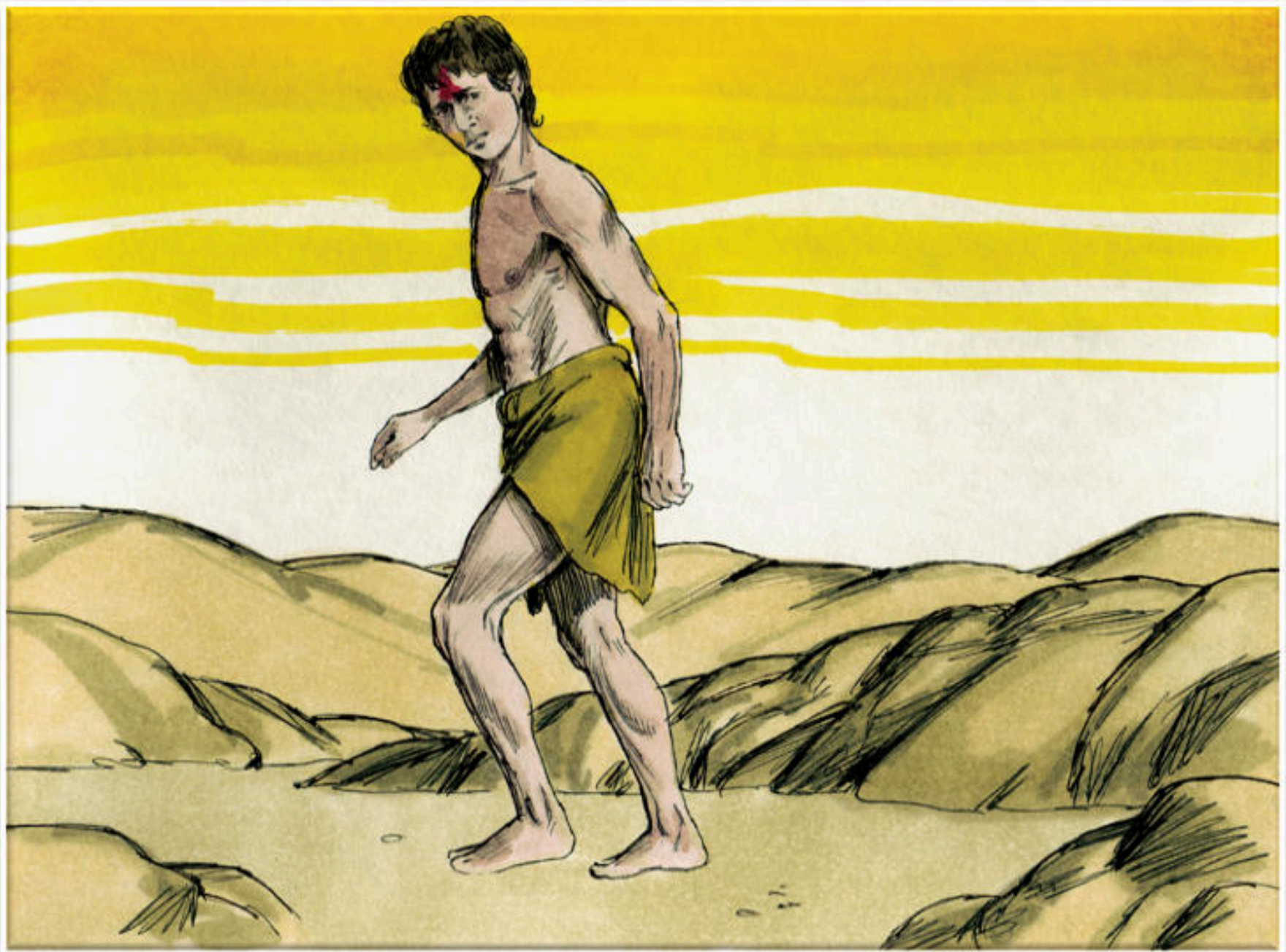


तू चाइं डोखरै बौयै लौ, तैबै बी पुरी  
फसल ना मिलैली। औज़ि तू दौरति दि  
ज़ागा - ज़ागा दि बाग़दु रौयै लौ। कैनेइ  
बोलौ, आउं एज़ी सौज़ा ना सौइं  
सौकदौ।





तैबै कैनेइ बोलौ, आउं तेरी नज़र कौइ  
दुर, औज़ि दौरति दि ज़ागा - ज़ागा दि  
बाग़दु रौउलौ। तैबै ज़ुणज़ौ बि मुकै मिलै  
लौ सेउ मूँ पोरु ज़ांगै लौ।





परमेश्वरेइ बोलौ, ज़ुणज़ौ ताउं ज़ांगै लौ ।  
तेसखि आउं सात गुणा ज़ादा सौज़ा  
देउ । तैबै तेसकै एक निशाण देणौ, ज़ेस  
देखियौ कोइ बि माणूछ तेस ना ज़ांगै  
लौ । एशेशै कोइ दुनिया दि पैहली मौत  
उइ ।

## For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.





यह किताब NLCI संस्थान के द्वारा तैयार की गई है।

हम मातृभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मातृभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मातृभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मातृभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मातृभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे कि बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मातृभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....धन्यवाद.....



This book was created with some Bloom Enterprise features enabled at no cost in order to support projects solely funded by the local community.